

निहोरि मेरी कीजिए ( १८ )

सुनो बृज गौरी दधि दान कीजिए ।  
सत्य कहता हूं न इनकार कीजिए ॥  
सुनो नन्द लाला नहीं रारि कीजिए ।  
विलम्ब हो रही है हमें राह दीजिए ॥

कैसे राह दूं तुम्हें बृज की किशोरी  
नित नित जाती छिप छिप चोरी  
आज तो चुकाओ दान सब दिन कोरी  
मेरी इस आज्ञा को नहीं टाल दीजिए ।१॥

काहे को लगाओ दान सांवरे कन्हाई  
विप्र तो नहीं तुम न पुण्य तिथि आई  
बचपन से तो तुम गैया चराई  
छोड़ दो डगर नहीं तो राजा खीजिए ॥२॥

बृज का हूं राजा मैं तो सत्य बात जानो  
हमारा ही हुकुम सर आखों पै मानो  
प्रजा हमारी हो रारि मत ठानो

निर्भय हो बेचो दधि रात पत्र लीजिए ॥३॥

काहे सो कहावैं हम प्रजा तुम्हारी  
अहीर के बालक हो बांकल बिहारी  
कैसो तेरो बाप और कैसी महतारी  
मान लो मुरारी अब कुछ लाज कीजिए ॥४॥

बड़ी हो गंवारि नहीं बोलती सम्भारि के  
दीठता दिखाती हो समुख राजकुमार के  
छीन लेऊं दूध दही मटकी को फोड़ के  
अब भी विलम्ब छोड़ निहोर मेरी कीजिए ॥५॥

हमें डीठ बोलते हो बड़े डीठ आप हो  
राह रोक अबला को देते सन्ताप हो  
अकड़ के खड़े हो मानो राजा के भी बाप हो  
एक ग्रामवासी जानि कुछ तो पसीजिए ॥६॥

मेरे प्रताप को न गोपी तुम जानती  
केवल कुमार नन्द राय का हो मानती  
वेद की रिचायें मेरी कीरति बखानती

सारी विश्व का हूं बाप क्षमा मांग लीजिए ॥७॥

छोटे मुंह बड़ी बात करत कन्हाई तुम  
धैन के चरैया को कैसे बृह्मा मानें हम  
सपने में अपने को मान लिया बृह्म  
जहां पीह जानें वहां डींग हांक लीजिए ॥८॥

बड़ी ही लबार तुम ग्वालनी गंवार हो  
लाज न दृगों में नही बोलती सम्भार हो  
भूमि भार तारने को मेरा अवतार हो  
नहीं विश्वास तो पूंछ साईं से लीजिए ॥९॥